International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

'पचपन खम्बे लाल दीवारे' में नारी चेतना

कृष्णा देवी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उषा प्रियवंदा की गणना हिन्दी के उन कथाकारों में होती हैं जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब,छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति को स्वयं अनुभव द्वारा व्यक्त कियाहै। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं का संजीव व मार्मिक चित्रण हुआ है। 'पचपन खम्बे लाल दीवारें' उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास है। इसमें भारतीय नारी–जीवन के एक लगभग अछूते पहलू पर प्रकाश डाला गया है। इसमें नारी की सामाजिक–आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। छात्रावास के पचपन खम्बे और लाल दीवारें उन परिस्थितियों के प्रतीक हैं जिनमें रहकर सुषमा को ऊब तथा घुटन का एहसास होता है, लेकिन वह उससे मुक्त नहीं हो पाती, शायद इन परिस्थितियों के बीच जीना ही उसकी नियति है।

उषा प्रियवंदा द्वारा लिखित इस उपन्यास में सुषमा मुख्य नारी पात्र है। सारी कथा इसी के इर्द–गिर्द घुमती है। यह उपन्यास सुषमा की मार्मिक पीड़ा को रेखांकित करता है जिसके लिए विवाह एवं प्रेम जैसे शब्द महज कल्पना बनकर रह जाते है। इस उपन्यास की नायिका एक पढ़ी–लिखी, सुशिक्षित महिला है। वह अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग है और अपनी अच्छाई–बुराई को अच्छी तरह समझती है। वह बचपन से ही बुद्धिमान व गढ़ने में होशियार होने के साथ–साथ ईमानदार भी है।

भारतीय नारी बाहरी दुनिया की नजरों में तो आधुनिक हो गई थी लेकिन अपने भीतरी, घरेलू जीवन में वह उसी भावुकता में डूबी प्रेम करने वाली और वियोग में रोने–धोने और तिल–तिल कर मरने वाली नारी ही थी। आज भी उसकी स्थिति में ज्यादा परिवर्तन नहीं आया है। लेकिन 'पचपन खम्बे लाल दीवारें' में लेखिका ने सुषमा के रूप में एक भिन्न नारी की सृष्टि की है। वह संवेदनशील है तथा साथ ही भावुकता का ज्वर भी इसमें है लेकिन, फिर भी वह कोरी भावुकता का शिकार नहीं होती बल्कि स्वयं संघर्ष करके उस भावना के अतिशय दबाव से उबरने में समर्थ हो जाती है। वस्तुतः सुषमा का ही उबरना नहीं है, यह अंगडाई लेती हुई नारी चेतना का उबरना है।

सुषमा एक मध्यवर्गीय परिवार से संबंध रखती है। उसके दो भाई और दो बहनें हैं, उसके माता–पिता है। पिता रिटायर एवं पक्षाघात की बीमारी से पीड़ित है। घर में माँ का ही शासन चलता है। पिता की पेंशन

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

काफी कम होती है, जिससे घर की दाल–रोटी चलना भी मुश्किल है, इसलिए सुषमा नौकरी करती है व उसका वेतन ही घर की मुख्य आय को स्त्रोत है। वह अपने दायित्व को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाती है। एक और तो परिवार की जिम्मेदारी दूसरी ओर नील का आकर्षण उसे अपनी ओर खींचता है। इन दोनों के बीच में सुषमा का संघर्ष ही उपन्यास की कथा है। भारतीय नारी जो अपने सम्पूर्ण जीवन का समर्पण दूसरों के लिए कर देती है। वही सुषमा के माध्यम से 'उषा जी' ने दिखाया है। जो प्रेम व परिवार दायिव्व के बीच में एक मूल्य के लिए दूसरे का त्याग कर देती है। इसे ही हम भारतीय नारी चेतना का नया आयाम कह सकते है।

भारतीय नारी आर्थिक विवशता और दायित्व बोध के कारण भी विवश हो जाती है। 'पचपन खम्बे लाल दीवारें' की नायिका जब से एम॰ए॰ हुई तब से आज तक नौकरी कर रही है। नौकरी करना उसकी मजबूरी है। घर के आर्थिक हालात अच्छे न होने के कारण ही उसे नौकरी करनी पड़ रही है। समाज में लोग नारी की आर्थिक विवशता का फायदा उठाते हैं। सुषमा को भी कॉलेज सक्रेटरी, जो पुराने रईस थे, कई बार उसको प्रलोभन दे चुके थे। परन्तु उसने कभी भी स्वीकार नहीं किया।

नौकरी ही उसके लिए सब कुछ थी, क्योंकि घर की सारी जिम्मेदारी सुषमा के कन्धे पर थी। वह नौकरी छोड़ देगी तो उसके छोटे भाई–बहनों का क्या होगा। जब कृष्णा मौसी उसको शादी करने के लिए कहती हुई उसे समझाती है कि कोई किसी का बहन–भाई नहीं है, समय पर सब धोखा दे देते है। तू तो इनके लिए सब कुछ कर रही है। अपने बारे में भी कुछ सोच ले तो वह कहती है कि इनको आवारा भी तो नहीं बना सकती।

घर का दायित्व उस पर इस कदर छाया हुआ था कि जवानी में ही उसकी जिंदगी खत्म हो चुकी थी। ''मैं केवल साधन हूँ। मेरी भावना को कोई साधन नहीं है। विवाह करके परिवर को निराधार छोड़ देना मेरे लिए संभव नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिन्दगी के लिए ढाल लिया है।'' उसने अपने को पचपन खम्बे से बनी उन प्राचीरों में स्वयं को बन्दी बना लिया था। सुषमा की आर्द्र पुतलियाँ उसके चेहरे पर क्लांति और अवसाद की छाप, उसके परिवार के दायित्व बोध की निशानी थे। यह स्थिति अकेली सुषमा की नहीं है। अनेक नारियों का सुषमा के माध्यम से समाज में यही हाल है।

उसे अपने पिता पर भी बड़ा क्रोध था। यदि पिताजी चाहते तो क्या उसका विवाह नहीं कर सकते थे। परन्तु उन्होंने कभी चाहा ही नहीं कि सुषमा का विवाह हों। जब वह एम॰ए॰ फाइनल में थी तो उसकी तो शादी लगभग तय हो ही गई थी परन्तु पिता ने न जाने क्या सोचकर उसे ढील दे दी। उस समय माँ को भी उसके विवाह न होने का अफसोस हुआ। उसे समझाते हुए पिताजी के कहे हुए शब्द उसे याद हैं, ''निर्मला

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

को देखो, नौकरी करती है, आराम से रहती है। हमारी सुषमा भी ऐसे ही रहेगी। उसे कोई तकलीफ न होगी।'' सुषमा भी जानती थी कि उनके रिटायर होने में सिर्फ तीन साल बचे थे और बच्चे छोटे थे। यदि सुषमा की शादी हो जाती तो सारी व्यवस्था गड़बड़ हो जाती। उन्होंने अपना स्वार्थ देखा और सुषमा के कन्धों पर परिवार का दायित्व डाल दिया।

इस उपन्यास में एक ''माँ अपनी सन्तान के सुखद भविष्य के लिए अपनी बड़ी कमाऊ बेटी सुषमा के अरमानों की बलि दे में तनिक भी संकोच नहीं करती।'' बेटी की कमाई पर तो पूरा अधिकार रखती है, लेकिन उसकी निजी जिंदगी के बारे में उसको तनिक भी फिक्र नहीं है वह हमारे समाज में बदलती हुई सोच को दर्शाता है। विडम्बना तो यह है कि सुषमा की सूनी आँखें और बुझा चेहरा कृष्णा मौसी, मामी मीनाक्षी, नील सभी को नजर आता है ''लेकिन माँ को नहीं क्योंकि उसका उससे कोई सरोकार नहीं उसे तो रूपया चाहिए वेतन के रूप में भी कर्ज के रूप में भी बेईमानी से भी आ जाए तो उसे तनिक परहेज नहीं।'' कृष्णा मौसी द्वारा सच्चाई से परिचित कराने पर ''तो क्या सुषमा को कुँआरी रखोगी ? इसका ब्याह नहीं करोगी. . . जब लड़की की उमर थी तब तो आजादी दी नहीं। अब वह कहाँ ढूढँने जाएगी। लड़कियाँ सभी की होती हैं, शादियाँ भी सभी करते हैं। तुम्हारी तरह हाथ पर हाथ रखकर बैठने वाला कोई नहीं देखा।'' सुषमा के जो स्वप्न हैं वो अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में मात्र कल्पना बन कर रह जाते हैं। अब शेष है पहनने ओढ़ने का शौक जो माँ को फूटी आँखों नहीं सुहाता। ''तुम बहुत फिजूल खर्च होती जा रही हो। जरा हाथ दबाकर खर्च किया करो। नीरू की शादी भी तो करनी है।''

उषा जी के उपन्यासों में परिवर्तित नारी की संघर्षशील मानसिकता को देखा जा सकता है। उसने अपनी कुंठाओं एवं तनावों के साथ सामंजस्य स्थापित किया है। आज नारी स्वावलंबी एवं स्वाभिमानी होने जा रही है। वह उन्मुक्त रूप से विचरण करने की आकांक्षी है। वह तनाव के साथ यथार्थ का सामना करते हुए अपने संघर्ष से अपने व्यक्तित्व को निखारने का प्रयास करती है। वह स्वयं को पुरुष के निकट आने से बचाती है। सुषमा अपने संघर्षशील व्यक्तित्व के बारे में नील को बताती। ''तुमने कभी यह भी सोचा नील कि मैं तैतीस साल के बाद अछूती और बेदाब तुम्हारी बाहों में कैसे आई?. . . पिछले ग्यारह सालों से मैं जिंदगी से निरन्तर लड़ रही हूँ।. . . मैं अपने शरीर के मोल से धल और आराम पा सकती थी पर मैंने यह स्वीकार नहीं किया।''

सुषमा शिक्षित होने के साथ व्यक्तित्व सम्पन्न हैं। सुषमा में आधुनिक स्त्री का प्रतिरूप दिखता है। सुषमा शिक्षा के क्षेत्र में अपनी विलक्षणता को प्रमाणित करती हुई अपने आपके प्रतिष्ठित किए हुए है जहाँ वह पूर्ण रूप से मान–सम्मान प्राप्त करती है। जब सुषमा का मित्र नील उससे निज परिचय देने को कहता है,

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

तब सुषमा प्रत्युत्तर में कहती है – ''उम्र तैंतीस वर्ष, घर की गरीब, हिन्दी की टीचर. . . कुछ और जानना चाहते हो ?''

उषा जी ने सुषमा और नील के बीच पनपते प्रेम और उसकी दारूण परिणती का अंकन सांकेतिक ढंग से किया है। सुषमा जिस पद पर थी, उसकी गरिमा को उषा जी बरकरार रखा है। कहीं पर भी उनके मिलने या वार्तालाप में छिछलापन नहीं दिखाई देता। नील का सुषमा की जिंदगी में आना एक शीतल झोंके की तरह था। सुषमा उसे नन्ही सी गुड़िया दिखती है और वह अपने प्रेम से उसे सराबोर कर देता है। सुषमा के बँधे जीवन में नील ने ऐसी हिलोरे उत्पन्न कर दी थी जिसके परिणाम मात्र की आशंका उसे दहला देती है। अपने चारों और दायित्व कुंठा, पद की गरिमा और परिवार की दीवारें खिंचे जाने के बावजूद उसके मन में भी चाह उठती है कि दो बाहें उसे भी सहारा दें, उषा जी ने यह बात साफ दिखा दी कि सुषमा को नील प्रिय था ''वह कहानियों की उस शापग्रस्ता राजकुमारी की भाँति थी, जो नील के स्पर्श से जाग उठी थी।'' उसे आश्चर्य इस बात का होता है कि क्या किसी इंसान में इतनी शक्ति होती है कि वह किसी के भुख पर ही नहीं उसके व्यवहार में कोमलता ला दें। नील का व्यक्तित्व इतना में आकर्षण था कि उसे ही नहीं वह मीनाक्षी को भी प्रभावित कर गया। मीनाक्षी को लगा कि सुषमा इस मामले में बहुत धनी है। जीवन की नीरसता, एकरसता में ऊबकर सुषमा ने अपने दुर्बल क्षणों में नील को अपने निकट आना दिया था। लेकिन समाज किसी को खुश नहीं देख सकता। नील और सुषमा के संबंधों को लेकर कॉलेज में चर्चा शुरू हो जाती है क्योंकि समाज में केवल विवाह संबंध को ही स्वीकृति प्राप्त है। अन्य सम्बन्धों को सम्बन्धों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता। ''होस्टल की लड़कियों में स्टॉफ–रूप में नौकरों में हर जगह आजकल तुम्हारी ही चर्चा है।'' ''हमारा दायरा ही ऐसा है। कॉलेज की चहारदीवारी के अन्दर जो भी होता है उसमें सभी रूचि लेते है।'' मीनाक्षी ये सब बातें सुषमा को बताती है। इन व्यर्थ की बातों से तुम्हारे पद की गरिमा आहत होती है। अध्यापक एक आदर्श है इसलिए सामाजिक मानकों को नहीं तोड़ सकता। प्रेम एक व्यक्तिगत अनुभूति है लेकिन समाज की दृष्टि में अहितकर है इसलिए प्रेम की परिणति विवाह में अनिवार्य है स्वतन्त्र प्रेम को कोई महत्व नहीं है। ''तुम अपना उत्तरदायित्व समझने की चेष्टा करो। तुम एक जिम्मेदारी के पद हो। तुम्हें अपनी छात्राओं के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।. . . यहाँ किसी का जीवन व्यक्तिगत नहीं है, वह एक खुली पुस्तक फिर लोग तुमसे तो वैसे ही जलते हैं। प्रिंसिपल तुम्हें इतना मानती है, तुम्हें वार्डन बनाने के लिए उन्होंने ही तुम्हारा नाम भेजा है।''

समग्रोलोचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि उषाजी ने 'पचपन खम्बे लाल दीवारें' की नायिका को अपने प्रेमी नील से मिलने के कई अवसर प्रदान किए परन्तु उसमें आधुनिकता का खुलापन नहीं था। उनका मिलना इतना सांकेतिक है कि आम पाठक उसे समझ नहीं पाता। उसने अपने शरीर को नील के

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

प्रति समर्पित कर दिया था। परन्तु कहीं भी उच्छृंखलता नहीं उसकी पोस्ट की गरिमा कहिए या उषा जी का संकोच कहिए। सारे कॉलेज ने जान लिया था परन्तु पाठक नहीं जान पाए सुषमा नील से बेहद प्रेम करती थी। पर उसे एक तरफ नौकरी व दूसरी तरफ परिवार, समाज व साथ ही कॉलेज में लड़कियों का उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। साथ ही वो सोचती है कि नौकरी चली गई तो पूरा परिवार सड़क पर आयेगा। पिता ने उसकी शादी इसलिए टाल रखी है। ताकि वह परिवार को संभाल सके। अम्मा भी यह कहकर टाल देती थी कि इतनी पढ़ी–लिखी के लिए वो कहाँ से खोजें। नील तक जान गया था कि उसका परिवार उसका अनड्यू एडवांटेज ले रहा है पर वह कुछ नहीं कर सकता था। हॉस्टल में उसके और नील के सम्बन्धों को लेकर जो अफवाहें फैलायी गयी उससे उसे बेहद पीड़ा पहुँचती है। जिन लड़कियों की उसने बहुत सहायता की थी आज वो ही उसके बारे में गलत–गलत बातें कर रही थी। वह ये सब सुनकर व सोचकर बहुत ही दुखी होती है यहाँ तक वो खुलकर रो भी नहीं पाती है। वह अकेलेपन के बोध से बुरी तरह घिर जाती है। उसे पता है कि कॉलेज की चारदीवारी ही उसका घर है, दुनिया है नील के जाने के बाद तो अकेलापन उसे और भी अधिक पीड़ा देता है। नील के कारण उसे खुशी मिल सकती थी, उसके नीरस जीवन में बहार आ सकती थी परन्तु समाज के लोगों ने यह सुख भी उनसे छीन लिया था। वह चाहकर भी अनैतिक कार्य नहीं कर सकती थी। बाहरी रूप से सुषमा वैभवशाली जिन्दगी जी रही थी, परन्तु वास्तव में उसकी जिन्दगी खोखली व अकेलेपन से घिरी हुई थी। कामकाजी नारी होने के कारण उसकी व्यक्तिगत जिन्दगी, व्यक्तिगत नहीं थी उसका सब कुछ सार्वजनिक था। उसकी हर हरकत का परिणाम छात्राओं पर हो सकता था। अतः अपनी नौकरी व सामाजिक प्रतिष्ठता के कारण अपने प्यार की कुर्बानी देनी पड़ी और स्वयं को 'पचपन खम्बे लाल दीवारों में कैद होना पड़ा। औरत की त्रासदी का इससे करूण रूप और क्या हो सकता है।

सुषमा के जीवन के एक अंश को कथावस्तु का मूलाधार बनाते हुए लेखिका ने सुषमा जैसी अनेक भारतीय युवतियों के संत्रास का यथार्थ चित्रण किया है, जो मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक और सामाजिक विवशताओं को ढ़ोती हुई अपने सपनों के सतरंगी को स्वयं ढहाकर चली आती है। वह बड़ी बेटी होने के नाते एक अच्छे बेटे की तरह जिम्मेदारी उठाकर जीवन संग्राम में अकेली सभी परिस्थितियों का सामना करने के लिए खड़ी है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

सुषमा की यह कहानी अंतर्मन की घुटन, पारिवारिक उत्तरदायित्व, सामाजिक लोक–लाज के बंधन, नारी की इच्छाओं और कामनाओं की सतरंगी उड़ान और अंततः मन को हारकर समाज से जीतने की कहानी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. उषा प्रियवंदा – पचपन खम्बे लाल दीवारें,

2. देशबन्धु पत्रिका – 2009.03.09